धावड़ा गोंद का सतत् विदोहन, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन

प्रस्तावना – धावड़ा काम्ब्रीटेसी कुल का एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह सामान्यतः सूखे व पथरीले वन क्षेत्रों में पाया जाने वाला वृक्ष है। मध्यप्रदेश में धावड़ा वृक्ष दमोह, सागर, धार, इंदौर, देवास, गुना, शिवपुरी एवं श्योपुर जिलों में पाया जाता है। धावड़ा वृक्ष सबसे अच्छी खाद्य गोंद देने वाली प्रजातियों के वृक्षों में से एक है। इस जाति के पेड़ में गोंद प्राकृतिक रूप से गर्मियों में उन भागों से निकलता है जहां इसकी छाल में घाव बन जाता है। धावड़ा को ग्रामीण क्षेत्रों में धवा, धौकड़ा, घट्टी आदि नामों से जाना जाता है। यह जलाऊ लकड़ी के साथ–साथ अपने एक महत्वपूर्ण उत्पाद गोंद जिसको घमघट्टी के नाम से भी जाना जाता है के लिये प्रसिद्ध है। धावड़ा गोंद बबूल गोंद से दो गुना ज्यादा चिपचिपा होता है।

धावड़ा गोद का उपयोग – इसका उपयोग मुख्यत खाद्य गोंद के रूप में किया जाता है। इसके अलावा दवाओं के निर्माण, कपड़ा, पेंट, पेट्रोलियम, अगरबत्ती, आदि उद्योगों में भी इसका उपयोग होता है। धावड़ा गोंद को शक्तिवर्धक व गर्म प्रकृति का माना जाता है।

विदोहन – धावड़ा गोंद सामान्यतया अत्यधिक गर्मी या घाव लगने से वृक्षों से निकालता है किन्तु कभी कभी तने में कुल्हाड़ी द्वारा चीरा लगाकर 10–15 दिनो तक छोड़ दिया जाता है। बनाये गये चीरा से गोंद निकलने लगता है। वृक्ष पर गहरा घाव बनाकर गोंद निकालने से वृक्षों को हानि पहुंचती है।

प्रथम बार धावड़ा गोंद एकत्र करने के बाद एक दिन के अंतराल पर खुरच कर गोंद को किसी बर्तन पोलीथीन कपड़े में एकत्र कर लिया जाता है।

प्रसंस्करण विधि

गोंद को वृक्ष से निकालने के बाद टोकनी में रखकर अच्छी तरह से धूप में सुखा लिया जाता है। एकत्रित गोंद से अवांछित पदार्थ, वृक्ष की छाल, मिट्टी इत्यादि दूर कर इसको लकड़ी की पीटनी से समान आकार के टुकड़ों में तोड़कर श्रेणियों का निर्धारण किया जाता है।

खुरपी

खुरपी द्वारा गोंद की श्रेणियॉ बनाना

श्रेणीकरण

गोंद मे से अवांछित पदार्थो को अलग करने के उपरांत इसको रंग के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। गोंद की विभिन्न श्रेणियॉ, उनकी पहचान,नाम एवं बाजार मूल्य निम्नानुसार है

श्रेणियां	नाम	रंग	मूल्य रू /किलो
श्रेणी I	धावड़ा सांख	पारदर्शी से सफेद	600–700
श्रेणी II	सफेद डली	सफेद	400–500
श्रेणी III	धावड़ा पीली डली	क्रीम से पीला	220–250
श्रेणी IV	धावड़ा समूदा	भूरा से कत्थई	200–220

धावड़ा सॉख

श्रेणी

भंडारण

गोंद को अच्छी तरह सुखाने और श्रेणीकरण के उपरांत उसको जूट या कपड़े के थैले में भरकर साफ एवं नमी रहित वातावरण मे भडारण करना चाहिए। धावड़ा गोंद का भण्डारण प्लास्टिक के थैलों में करना अधिक लाभप्रद है।

विपणन

गोंद का संग्रहण एव विपणन ग्रामीणों की आजीविका का एक अच्छा स्त्रोत बन सकता है। विगत पॉच वर्षो मे गोंद के मूल्य मे लगातार वृद्धि हुई है। गोंद के संग्रहण, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन हेतु ग्रामीण स्तर पर रोजगार तैयार किये जा सकते है। विगत वर्षो मे धावडा गोंद के बाजार मूल्य मे वृद्धि निम्नानुसार है। गोंद काफी तीव्र गति से बढा है।

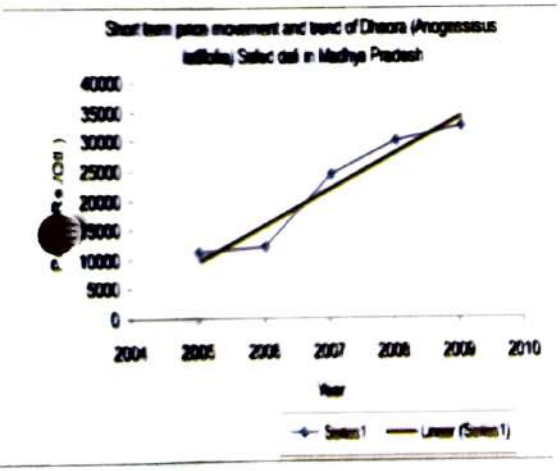

संग्रहण के सम्बन्ध मे सावधानियां

- पेड़ की छाल की मोटाई 0.4–0.6 स.मी होती है। अतः घावों को इससे अधिक गहरा नहीं करना चाहिए ताकि भीतरी भाग में घाव न बन सके।
- गोंद निकालने हेतु मध्यम आयु वर्ग के वृक्षों का चयन करना चाहिए। इनसे अधिक गोंद निकलती है।
- तने की मोटाई छाती की ऊंचाई पर कम से कम 90 सें मी. होनी चाहिए।
- धावड़ा गोंद का उपयोग खाद्य गोंद के रूप में विशेष रूप से किया जाता है इसलिये प्रसंस्करण एवं भंडारण करते समय साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये।
- गोंद का भंडारण उसे सुखाने के पश्चात् ही करना चाहिए।
- वृक्षों पर अनियंत्रित चीरा नही लगाना चाहिये।

रोपणी एवं रोपण तकनीक

धावड़ा वृक्षों में जून से सितम्बर के मध्य पुष्पन होता है, इसके फल माह दिसम्बर से मार्च के बीच में पक कर नीले भूरे रंग के हो जाते है। पके हुए फल का फरवरी से मार्च के माहों मे संग्रहण किया जाता है।

रोपणी में बीजों को उठी हुई क्यारियों में 10 से. मी. के अंतराल पर मार्च अप्रैल माह मे बोया जाता है। रोपणी क्यारी की हलकी सिंचाई प्रतिदिन की जाना चाहिये। अंकुरण लगभग 15 से 20 दिनों मे प्रारम्भ हो जाता है। छाया में बनी क्यारियों में अंकुरण अच्छा होता है। सूर्य के प्रकाश में खुली हुए क्यारियों में अंकुरण बहुत कम होता है। नये पौधों को उखाड़कर पोलीथीन थैली में प्रतिरोपित किया जाता है। एक वर्ष पुराने पौधों का रोपण जुलाई माह मे किया जाना चाहिए। रोपण अंतराल सामान्यतया 2मी. X 2मी. X 2मी. अंतराल रखा जाना चाहिये।

संपर्क
डॉ. प्रतिभा भटनागर एवं मनीष गोस्वामी
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म. प्र.)
फोन नं 0761, 2665540, 2666529

धावड़ा 14

(Anogeissus latifolia)

सामाजिक आर्थिक एवं विपणन शाखा
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म. प्र.)